आध्यात्मिक विकास spiritual development

आध्यात्मिक विकास का अर्थ मानव जीवन की परिपक्वता से लिया जाता हैं ,जिसमे दो तथ्य महत्वपूर्ण है- स्वयं, को जानना तथा मानवता का विकास । विद्यार्थी आध्यात्मिक विकास से वर्तमान जीवन में सत्यता को पहचानते है तथा सचेतना का विकास करते हैं। बालक सचेतना तथा स्व अनुशासन मे रहना सीखता है ।बालक के आध्यात्मिक विकास से तात्पर्य बालक की उस आध्यात्मिकता का विकास करना जो उसके अन्दर जन्म से ही विद्यमान रहती हैं बालक के अन्दर आध्यात्मिकता का गुण उसी तरह जन्म के समय विद्यमान रहता है जैसे शारीरिक तथा मानसिक विकास की संभावनाएं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने शिक्षा की एक सम्पूर्ण परिभाषा देते हुए उपरोक्त अवधारणा की पुष्टि निम्न शब्दों में की है। शिक्षा से मेरा अभिप्रायः बालक एवं मनुष्य के शरीर मस्तिष्क एवं आत्मा को सर्वोत्तम गुणों के चतुर्मुखी विकास से (By education, I mean an all round drawing out of the best in child and man , body, mind and spirit)आध्यात्मिकता इस दृष्टि से आत्मा के अपने उस विशिष्ट एवं विशुद्ध रूप से सम्बन्ध रखती है जिसकी सत्ता को परमात्मा के एक अंश (part and parcel of the Greater soul) के रूप में स्वीकार किया जाता है। सही तौर पर देखा जाये तो हम सभी का सृजक परमपिता परमात्मा ही है, उसी का अंश, आत्मिक तत्व रूप मैं बच्चे में जन्म से ही विद्यमान रहता है।इसलिए बालक की प्रकृति जन्मजात से दैवीय (divine) होती है। बच्चे की यही दैवीय प्रकृति उसमें विद्यमान आध्यात्मिकता (Spirituality) की वह चिंगारी है जिसे शिक्षा द्वारा प्रज्ज्वलित कर ज्वाला बनाने की बात की जाती है।

यह भी सत्य है कि ईश्वर अपने निमित्त (for serving His own purpose)ही सृष्टि की रचना करता है और ऐसी रचना कर वह मनुष्य मात्र से यह आकांशा रखता है कि जिस निमित के लिये उनकी रचना की गयी है उन कार्यों को पूरा करें। उसके ऐसे निमित्त या वृहत उद्देश्य मुख्य रूप से दो ही है *एक तो उसके साथ उनका आत्मिक सम्बन्ध बना रहे तथा दूसरा उनका उसकी सृष्टि के साथ मधुर और सामंजस्य सम्बन्ध स्थापित रहे। यह तभी हो सकता है जबकि उन्हें इस बात का आभास हो कि वे तो उसी के अंश है और सृष्टि में जो कुछ है वह उसी का है। यही आभास होना आत्म ज्ञान या आत्म-अनुभूति कहलाता है और शिक्षा के द्वारा किये गये आध्यात्मिक विकास का भी मूल उद्देश्य है।* दूसरे शब्दों में जब हम यह कहते है कि किसी बालक या मनुष्य विशेष का आध्यात्मिक विकास किया जाना चाहिये तो हमारा आशय यही होता है कि व्यक्ति को अपने वास्तविक स्वरूप का आभास कराने हेतु आत्म अनुशासन या आत्म-अनुभूति करने की विशेषता को विकसित किया जाना चाहिये। उपरोक्त व्याख्या के आधार पर अब अध्यात्मिक विकास को निम्न शब्दों में परिभाषित करने का प्रयत्न किया जा सकता है। 'आध्यात्मिक विकास से तात्पर्य व्यक्ति में विद्यमान उस आध्यात्मिकता(Spirituality) का विकास करना है जो उसमे जन्मजात होती है और जिसके विकास के माध्यम से व्यक्ति को एसे आत्मज्ञान या आत्मनुभूति की प्राप्ति होती जो उसे ईश्वर तथा उसकी सृष्टि के साथ निकटता बनाये रखने में सहायक सिद्ध होती है'। प्रश्न उठता है कि इस प्रकार के आत्मज्ञान या आत्मनुभूति की उपलब्धि का रास्ता कहा होकर जाता है? इस प्रकार का विकास

सम्भव kaiseहो सकता है। इन प्रश्नों पर अगर गहरायी से मंथन करके देखा जाये तो व्यवहार की शुद्धता एवं पवित्रता ही वह मार्ग है जिसका अनुसरण करके आध्यात्मिकता के विकास के लक्ष्य की उपलब्धि हो सकती है। गांधी जी ने इसी तथ्य की और इशारा करते हुये अपनी आत्मकथा में स्पष्ट रूप से लिखा है।

"आत्मा का विकास करना चरित्र का निर्माण करना हैतथा व्यक्ति को ईश्वर के ज्ञान एवं आत्मानुभूति की और अग्रसर करना"

(To develop the spirit is to build character and to enable us to work towards knowledge of God and Self Realization.) अत: जब हम बालक में आध्यात्मिक विकास किस तरह होता है इस बात की जानकारी करना चाहते है या उसके विकास के लिये उपयुक्त पोषण तत्वों की तलाश करना चाहते है तो इसमे निश्चित रूप से उसमें चरित्र निर्माण कैसे होता है या कैसे किया जा सकता है इसी बात को लेकर आगे बढ़ाना होगा। इस अर्थ में आध्यात्मिक विकास को चारित्रिक विकास का पर्याय कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है